

00353

**POST GRADUATE CERTIFICATE IN
BANGALA - HINDI TRANSLATION
PROGRAMME (PGCBHT)**

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2013

एम.टी.टी.-002 : बांग्ला-हिन्दी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन

समय : 3 घंटे

अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. **किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 300 शब्दों में दीजिए : $10 \times 2 = 20$**
 - (a) बांग्ला और हिंदी की भाषिक समानताओं पर प्रकाश डालिए।
 - (b) हिंदी और बांग्ला भाषा में मुहावरों की समानताओं एवं असमानताओं की सोदाहरण चर्चा कीजिए।
 - (c) बांग्ला-हिंदी भाषाओं के बीच अनुवाद की परंपरा पर प्रकाश डालिए।
2. **निम्नलिखित बांग्ला शब्दों का हिंदी पर्याय लिखिए।** 5
कागज, जायगा, गुजब, छाई, चाकरी, बयस, विज्जप्ति,
निजश्च, सभापतिञ्च, दूपूर
3. **निम्नलिखित हिंदी शब्दों का बांग्ला पर्याय लिखिए।** 5
ढाई, हाथ, बारिश, खोना, बयाना, लघुकथा, वार्तालाप, अंडा,
कानून, पीछे

4. নিম্নলিখিত কহাবর্তী-মুহাবরী মঁ সে **किन्हीं पाँच** का हिंदी अनुवाद करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग करें। 10

काटा घाये नुनेर छिटे, एक काने शोना आर एक काने बेरिये याओया, बिपदकाले बुक्किनाश, चोर पालाले बुक्कि बाड़े, थिचडी पाकानो, गर्तेर साप खुबिये तोला, गेयोँ योगी भिख पाय ना, कुयोर ब्याङ, आकाश भेङे पड़ा

5. निम्ललिखित अंशों में से **किन्हीं तीन** का हिंदी में अनुवाद कीजिए।

(a) मानुषेर प्रति विश्वास राखते चेष्टा करो देवु, जगते सबई सतिय असं नय। ह्यतो परिवेशेर चापे -

15x3=45

सतय्रत तौर श्वावगत भारी आर खादे-नामा गलाय बललेन, आमि बलछि छेलेटा जात अपराधी नय। परिवेशेर चापेई -

सतय्रतर गलार श्वर येमन गभीर गभीर, पुत्र देवय्रतर गलार श्वर तेमनि हालका आर चड़ा। देवय्रत अनेकटाई तार मार मत। माये छेले दुजनेई सतय्रतके 'मिनमिने' एवं भावबिलासी बले अभिहित करे थाके।

अतएव एखन वापेर एई मानविकताय आशावादी वाक्यटि देवय्रतर काछे 'अमृतं बालभाषितं' एर मतई मने हल। एवं निजश्च श्वाभाविक चड़ा गलाके आर एकट्टु चड़िये बले उठल देवय्रत, आपनार ओई सतय्युगमार्का महं चिन्ताटिन्ता एयुगे अचल बाबा। पाजिट्टाके थानाय जमा दिये तबे आमार काज ! विश्वास !! मानुषेर प्रति विश्वास राखवार चेष्टा करते हवे ! कोथाय आछेन आपनि एखनो ? कोन श्वगीय श्वपल्लोके बास करछेन ?

सतय्रत एकट्टु हासलेन। बललेन, ह्यतो मूर्खेर श्वगेई। तबु 'श्वर्गसुखटा' तो लाभेर खाताय जमा पड़छे। अगाध अनन्त नरकेर थेके एमन की थाराप ?

দেবরত আরো চড়ল। বলে উঠল, আমি বলি- খুব খারাপ। একটা মিথ্যে রঙের রঙিন চশমা পরে সংসারটাকে দেখে সন্তোষ পাওয়া শুধু বোকামিই নয়, মিথ্যাচারও ! আপনি কি বলতে চান আজকের পৃথিবীতে আপনি সব মানুষকে বিশ্বাস করেন ?

সতব্রত আবারও হাসলেন। বললেন, 'করি' এমন কথা বলতে পারব না, তবে বিশ্বাস করার, বিশ্বাস রাখার চেষ্টা করি। অবশ্য আজকের 'কैसे' চেষ্টা করে নয়, আমি সত্যিই বিশ্বাস করছি, ছেলেটা জাত অপরাধী নয়।

- (b) বিগত কয়েক বছরে ভারত বিশ্বের ডায়াবিটিস রাজধানীর শিরোপা পেয়েছে। অলস জীবনযাপন, শারীরিক পরিশ্রমের অভাব, ওবেসিটি, অত্যধিক স্ট্রেস এবং বেশি মাত্রায় ক্যালরিযুক্ত খাবার, এসবই ভারতীয়দের মধ্যে ডায়াবিটিসের প্রবণতা বাড়িয়ে তোলার পিছনে দায়ী। আধুনিক ওষুধপত্র ডায়াবিটিস নিয়ন্ত্রণ করতে পারলেও ব্যালেন্সড খাদ্যাভাসের পরিপূরক হয়ে উঠতে পারে না। কিন্তু ব্রিটিশ বায়োলজিক্যালসের আলোড়ন সৃষ্টিকারী ডায়েটরি সাল্পিমেন্ট ডি-প্রোটিনের সৌজন্যে এখন ডায়াবিটিস আর অস্বাভাবিক কিছু নয়। ডি-প্রোটিনের অনবদ্য ফর্মুলা পুষ্টি ও স্বাদের কম্বিনেশনকে ধরে রাখতে সাহায্য করে। এরই সঙ্গে দীর্ঘকালীন ভিত্তিতে ডায়াবিটিসের জটিলতাকেও নিয়ন্ত্রণ করে। তাই কিছু কিছু খাবার খাওয়ার উপর নিষেধাজ্ঞা থাকলেও পুষ্টির অভাব খুব একটা হয় না। দুর্বলতা ও ক্লান্তিকে দূরে সরিয়ে রাখা যায়।

ডি-প্রোটিনের ব্যাপারে আরও বিশদে জানতে আজই আপনার ডাক্তারের সঙ্গে যোগাযোগ করুন।

(c) অভিনয়ে শুভ্রজিৎ দত্তর ব্যোমকেশ চরিত্রানুগ, যদিও কিছু কিছু জায়গায় তাঁর অভিব্যক্তি মাত্রাতিরিক্ত হওয়ায় চরিত্রের শান্ত-ধীর বৈশিষ্ট্যটি হারিয়ে যায়। ফণীভূষণের ঘরে হঠাৎ বইয়ের দেরাজের কাছে গিয়ে মূকাভিনয়ের আদলে বই নাড়াচাড়া করার অংশটি ভীষণ দৃষ্টিকটু লাগে, যেমন খারাপ লাগে হঠাৎ দাঁড়িয়ে পড়ে ঙ্গ কুঁচকে তাকিয়ে আবার স্বাভাবিক হয়ে মঞ্চ থেকে প্রস্থানের দৃশ্যটি। সুরত বলের অজিত যথাযথ তবে পড়ার সময়ে চশমা নিয়ে যে-অস্বস্তিটি দেখানো হয়েছে, তা চলশে পড়া প্রবীণ ব্যক্তির ক্ষেত্রে সাধারণত দেখা যায়। তবে তাঁর শারীরিক অভিব্যক্তি আর চলন অজিতের গাঙ্গীর্যকে সঠিক মাত্রায় ফুটিয়ে তুলতে পেরেছে। অন্যান্য চরিত্রে অভিনেতার এতটাই অ্যামেচারিশ যে সামগ্রিক নাট্যচলনকে তা বিঘ্নিত করে। এই বিষয়ে নির্দেশক ব্রাত্য বসুর দৃষ্টিপাতের প্রয়োজন আছে। পুলিশের দারোগাকে একটি ক্লাউনে পরিণত করার কারণটি কী তা বোঝা গেল না। গল্পের স্বাভাবিক চলনেই পুলিশ পরাস্ত হয় ব্যোমকেশের কাছে, তাকে আলাদা করে হাস্যকর করার প্রয়োজন হয় না। তবে সত্যবতী চরিত্রে পৌলোমী বসুর অভিনয় দর্শকের দৃষ্টি আকর্ষণ করে। তাঁর সংলাপ উচ্চারণ, অভিব্যক্তি প্রকাশ বা মঞ্চ ব্যবহার - প্রতিটি ক্ষেত্রেই তিনি অত্যন্ত সাবলীল। সীমিত অবসরে চরিত্রটির বিভিন্ন স্তর দর্শকের কাছে তিনি সহজেই উন্মোচিত করতে পেরেছেন। অন্যান্য বিষয়ে প্রয়োজনাটির একটি প্রফেশনাল মান বজায় থেকেছে। বিশ্বতোষ চট্টোপাধ্যায়ের আবহ রচনা নাট্যটিকে সাহায্য করেছে।

(d) উল্লেখ করা দরকার 1930-এর দশকের একেবারে গোড়ায়, '31-এই সুব্রহ্মণ্যম চন্দ্রশেখর সিঙ্গুলারিটি নিয়ে একটা ডেউ তুলেছিলেন। তাঁর গণনা অনুযায়ী সূর্যের থেকে 1.4 গুণ বা তার বেশি ভারী কোনও নক্ষত্রের অন্তিম পরিণতি হল এক অসীম ঘনত্বের অবস্থা, সিঙ্গুলারিটি। ফলে সেদিনের অত্যন্ত প্রভাবশালী বিজ্ঞানী আর্থার স্ট্যানলি এডিংটনের সঙ্গে মনান্তর ঘটে তরুণ চন্দ্রশেখরের। এডিংটন সিঙ্গুলারিটির পক্ষে ছিলেন না।

চন্দ্রশেখর তাঁর গণনায় একটা নক্ষত্রকে কল্পনা করেছিলেন ঘন পরমাণু অবস্থায় থাকা কণার সমষ্টি হিসেবে। তখনও পরমাণুর নিউক্লিয়াসের উপাদান হিসেবে নিউট্রন কণা আবিষ্কৃত হয়নি, নক্ষত্রের উপাদান সংক্রান্ত ধ্যানধারণাও ছিল প্রাথমিক পর্যায়ের। পরে অবস্থাটা বদলায়। রবার্ট ওপেনহাইমার ও হাটল্যান্ড শ্বাইডার 1939-এ যখন নতুন করে হাত দিলেন সিঙ্গুলারিটি সমস্যায়, তাঁরা সেই নতুন জ্ঞানের নিরিখে একটা তারাকে কল্পনা করে নিলেন পরমাণুর নিউক্লীয় উপাদানের সমষ্টি হিসেবে। কিন্তু সেই অঙ্কও গিয়ে থামল সিঙ্গুলারিটিতে। কুট গ্যোয়ডেল, বিশ শতকের এক অনন্য গণিতবিদ, তিনিও মাথা ঘামালেন এ নিয়ে। তিনি কিছু বিশেষ প্রাথমিক দশা কল্পনা করে নিলেন, এবং সেই সঙ্গে আরও কিছু কলকাঠি নাড়লেন এমনভাবে, যাতে সিঙ্গুলারিটি হয়তো গেল, কিন্তু অমন বাঁধনে বাঁধা ব্যাপারটা খুব গ্রহণীয় হয়ে উঠল না সকলের কাছে। বোঝাই যাচ্ছে, সে বড় সুখের সময় নয়। পদার্থবিজ্ঞানের নিয়মনীতি আর ব্ল্যাক হোলের মতো এক দুঃশাসন _____ অন্তত তার সম্ভাবনা, রয়ে গেছে এক আকাশের নীচে, এ

ব্যাপারটার মধ্যেই একটা হাস্যকর অবাস্তবতা আছে।

এদিকে আর-এক বিপত্তি দেখা দিল সেই আকাশেরই সূত্রে। প্রথমে জর্জে লেমাৎ, পরে এডউইন হাবল্— দুই জ্যোতির্বিজ্ঞানী মহাকাশে গ্যালাক্সিদের আচরণ দেখে ক্রমশ বিস্মিত হয়ে উঠেছিলেন। গ্যালাক্সি মানে কয়েক হাজার কোটি নক্ষত্রের এক-একটা বৃহৎ সমষ্টি, যা অপার মহাকাশে বিচরণ করছে। এরকম অন্তত কয়েকশো কোটি গ্যালাক্সি আছে ব্রহ্মাণ্ডে। আমাদের সূর্যও অমন এক গ্যালাক্সির নগণ্য এক সদস্য, সেই গ্যালাক্সির নাম দেওয়া হয়েছে মিল্কি ওয়ে বা ছায়াপথ।

- (e) দুর্নীতির মতো একটি বিষয়কে নিয়ে অগ্না হাজারের তড়িঘড়ি কিছু করে প্রভাবশালী হতে চাওয়া ঠিক হয়নি। এখন তাঁর দলের মধ্যেই ভাঙন ধরেছে। দেশের জনগণও তাঁর উপর আশ্রয় হারাচ্ছে কারণ, তিনি আন্দোলনকে সঠিক দিশায় নিয়ে যেতে পারছেন না। দুর্নীতির মতো সর্বব্যাপী ব্যাধিকে নির্মূল করতে হলে ভেবেচিন্তে এগোতে হবে। দুর্নীতি বিরোধী আন্দোলনকে আগে সুবিন্যস্ত করতে হবে। ‘অরাজনৈতিক’ দলকে এমনভাবে সংগঠিত করা দরকার, যাতে মূল উদ্দেশ্য থেকে দলের কোনও সদস্যই সরে না যায়।

তড়িঘড়ি জনলোকপাল বিল পাশ করিয়ে নিলেও দুর্নীতিকে সহজে প্রতিরোধ করা সম্ভব হবে না, যদি না সবার আগে দুর্নীতিকে যাঁরা প্রশ্রয় দেন তাঁদের বিরুদ্ধে উপযুক্ত শাস্তিমূলক ব্যবস্থা নেওয়ার সুযোগ থাকে। যাঁরা প্রতিনিয়ত দুর্নীতির শিকার হচ্ছেন এমন সব অসহায়, নির্যাতিত মানুষদের নিয়ে দুর্নীতির বিরুদ্ধে অভিযান হোক। অগ্নার আন্দোলন

ने राष्ट्रीय महिला आयोग को उनका मुरीद बना दिया है। आयोग अब आमिर को महिला अधिकार संबंधी अभियानों से जोड़ने की कोशिश कर रहा है।

आयोग की अध्यक्ष ममता शर्मा ने कहा- हम आमिर के शुक्रगुजार हैं कि उन्होंने इस तरह के कार्यक्रम को चुना। इसके पहले ही भाग को हर तरफ से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है। इसीलिए हमने आमिर को आयोग के महिला अधिकार संबंधी अभियानों से जोड़ने की योजना बनाई है। उन्होंने कहा कि आयोग की ओर से आमिर को कई बार फोन भी किया गया लेकिन अभी उनसे इस संबंध में बात नहीं हुई है लेकिन आमिर की पत्नी किरन राव से इस बारे में बात हुई है।

आयोग महिला अधिकारों और उनके हितों से जुड़े कई तरह के जागरूकता अभियान चलाता है जिसमें कन्या भ्रूणहत्या, दहेज, बाल कुपोषण जैसे कई विषय शामिल हैं। ममता ने कहा कि आमिर ने अपने कार्यक्रम के जरिए कन्या भ्रूणहत्या के विषय पर नए सिरे से बहस छेड़ दी है। ऐसा नहीं है कि इस गंभीर समस्या पर किसी का ध्यान नहीं था लेकिन जब कोई लोकप्रिय हस्ती किसी सामाजिक सरोकार वाले मुद्दे को उठाती है तो लोग इस ओर आकर्षित होते हैं।

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की ओर से आमिर खान को पिछले साल बच्चों में कुपोषण दूर करने के लिए ब्रांड एंबेसडर बनाया गया था। आयोग की अध्यक्ष ममता ने साथ ही कहा कि कन्या भ्रूणहत्या के मुद्दे पर केंद्र सरकार के अलावा राज्य सरकारें और आयोग काफी काम कर रहा है और इस विषय पर समाज की भूमिका भी अहम है।